

वैश्विक व समकालीन परिप्रेक्ष्य में मृदुला गर्ग के उपन्यासों का मूल्यांकन

सोनी कुमारी

शोधार्थी

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद,

धनबाद।

SONIKUMARI02011990@gmail.com

सार- बाजारवाद व पूँजीवाद पूरे समाज में व्याप्त हो रहा था और स्त्री समाज इसके प्रभाव से कैसे बच सकती थी। स्त्री के विचार आसमान छूने की थी तो पाँव धरती नापने की, वह शांत कैसे बैठ सकती थी तथापि इस बाजारवाद के वैश्विक रूप में वह भी अपने आप को समा लेना चाहती है। अतः इस लेख में मृदुला गर्ग के विचार से समाज की प्रगति और उद्धार में नारी के बहुमूल्य योगदान को निर्विवाद रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। उनकी नारियाँ वैश्विक परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार अपने को समेटने और विकसित करने का प्रयास कर रही हैं उसका वर्णन इस लेख में विस्तारपूर्वक किया गया है।

बीज शब्द - स्त्री-अस्मिता, 21वीं सदी, भूमंडलीकरण, समाज, मूल्य, समकालीन, संघर्ष।

21वीं सदी में भारतीय साहित्य में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के साहित्य में बाजारवाद व पूँजीवाद अपने विस्तृत के रूप में अवतरित हो रहा है। आधुनिकरण और बाजारवाद की प्रक्रियाओं के चलते नारी में उच्च शिक्षा का प्रचार जोरों शोरों से होने लगा। प्राचीन मूल्य और मान्यताओं के प्रति अनास्था की भावना उन्हें समाज में अपने हक के लिए अभिप्रेरित करने लगा। उपन्यासकार ने भी नारी मन की आंतरिक गुत्थियों को सुलझाने में कोई कसर नहीं छोड़ा। अपनी प्रतिभा का विशेष प्रयोग करते हुए लेखिकाएँ स्त्री को घर से बाहर निकलकर कार्यक्षेत्र में भी प्रविष्ट करने लगीं। नारी की बदलते स्वरूप को हाशिए से परिधि की ओर लाने का प्रयास 21वीं सदी में समकालीन लेखिका करती हैं।

वैश्विक परिपेक्ष में समाज की बदलते स्वरूप खासकर स्त्री के लिए गर्म जोशी का मामला रहा। समकालीन लेखिका यह उद्घोष करने से भी नहीं डरती की स्त्री समाज के लिए क्या है और समाज में वह क्या कर सकती है। वह अपने काव्य के माध्यम से भी समाज की स्त्री को अभिप्रेरित करने लगी। रेचल सिंह की पंक्ति वैश्विक स्तर पर नारी शक्ति का प्रतीक है- “कुछ पैरों के चीन्ह/ दिखे मुझे रेत पर/ मेरा किशोर मन, नहीं रोक सका मुझे/ मैं दौड़ने लगी उन पदचिन्हों के पीछे/ जो दे रहे थे मुझे लालच/ दौड़ने और दौड़ाने के लिए/ मैं भी कम न थी।/ मुझे जो जीतना था उन पद चिन्हों को/ अपने और अधिक पद चिन्ह बनाकर मुझे लगा/ अरे! ये तो मुझ जैसी किसी लड़की के निशान हैं।/जो शायद दौड़कर/ जीत लेना चाहती हो क्षितिज को/ जो तोड़ लेना चाहती हो/ अकाश के तारे और/ बौना बना देना चाहती हो/ संसार की सब ऊँचाईयों को/”¹

यह विदित है कि स्त्री ने हमारी सामाजिक व्यवस्था के दोषों और उससे प्राप्त हुए संघर्षों का पूरा इतिहास देखा ही नहीं जिया भी है। अब उसके भीतर एक ज्वलन्त संघर्षशील तथा लक्ष्यगामी महाशक्ति विराजमान है। संघर्ष का नैरन्तर्य उसे बार-बार अपने लिए जमीन और आसमान दोनों खोजने के लिए अभिप्रेरित करने लगा है। वह श्रद्धा और करुणा की अधिकारिणी तो हमेशा से रही परन्तु कर्मयुग, कौशलयुक्त अधिकार सम्पन्न स्त्री रूप में अग्रसर अब होने लगी।

“आज की शिक्षित नारी पारंपरिक नारी से भिन्न है। वह व्यक्तिवादी होते हुए भी पाश्चात्य नारी से भिन्न है। वैवाहिक संबंधों के स्थायित्व और सुरक्षा को समझती है। उसकी मानसिकता में इतना परिवर्तन आ गया है कि वह अपने को मिटाकर परिवार को बनाने की पक्षधर नहीं है। अपितु अपने को बनाकर परिवार के रूप को और अधिक निखारना चाहती है।”²

साहित्य व समाज के क्षेत्र में नारी चेतना का उदय उस समय से मान सकते हैं, जब से नारी ने अपने ऊपर अत्याचार को भोगा। युगों के साथ नारी चेतना के स्वर बदले, युग सापेक्ष मूल्यों के साथ ही नारी अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को समय-समय पर परिभाषित

करने लगीं। समय बदला, समाज बदला और स्त्री के विचार भी। “इस प्रकार नारी शिक्षा की इस प्रगति ने एक ओर नारी को भारतीय आदर्शों की संपोषिका बनाए, दूसरी ओर पश्चात सभ्यता के एवं संस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न विलासिता एवं यौवन की अतृप्त भूख ने नारी को दर-दर की ठोकरें खाने के लिए बाध्य किया। किंतु जब नारी की आंखें खोली तो उसने भी अपने संस्कृति को पहचान उसी की छत्र-छाया में शांति पाने की चेष्टा की। शिक्षा की इस नवीन प्रगति ने समस्त नारी जाति को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया। नारी समझने लगी कि वह पुरुषों से किसी भी बात में कम नहीं। पुरुषों के समान ही समाज में उसे भी अधिकार मिलने चाहिए। वह पुरुष की सहयोगिनी है, अर्धांगिनी है, दासी नहीं।”³

नारी को समाज की चारदीवारी से ऊपर उठाकर उसे स्वतंत्र अस्तित्व को बढ़ावा देने का प्रयत्न हमारी समकालीन लेखिकाएँ करने लगीं। ऐसे ही सशक्त आधुनिक लेखिका हैं, मृदुला गर्ग जिन्होंने अपनी साहित्य साधना के माध्यम से समाज के ऐसे चेहरे को बदल दिया जो समाज के चारदीवारों के अंदर कैद थीं। उन्होंने स्त्री की ऐसी तस्वीर का कायाकल्प अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित किया जो बाजारवाद, पूंजीवाद एवं भूमंडलीकरण को जानने के लिए जुझारू स्त्री रूप में समाज में उपस्थित होने के लिए आतुर थी। यही कारण है कि मृदुला गर्ग की नायिका ही नहीं उपनायिका भी पढ़ी-लिखी शिक्षित स्त्री होने के बावजूद अपनी अस्मिता की तलाश के लिए समाज में जद्दोजहद कर रही हैं। यहाँ सवाल यह उठता है कि उनकी स्त्री पढ़ी-लिखी शिक्षित होकर भी अपने अस्मिता की तलाश के लिए क्यों संघर्ष कर रही हैं, तो यह संघर्ष है उसकी अपनी आत्मसार्थकता के लिए क्योंकि वह शिक्षित और कामकाजी तो है परन्तु अपनी आत्मसार्थकता की तलाश पूरी नहीं कर पा रही है। अपने अंदर की विचारों से स्वतंत्र होने के लिए खुद ही खुद से लड़ती, जुझती है और निष्कर्ष पर पहुँचती है कि उसे जितना है अपने अंदर के विचार से तभी वह समाज में हासिल कर सकती है अपनी बेबाक पहचान। अंततः अपनी आत्मसार्थकता की तलाश पूरी करती है स्वयंशोधक बनकर।

उनके उपन्यासों के विषय “समकालीन भारतीय समाज, विशेषकर शहरी जीवन, में स्त्री-पुरुष संबंधों, नारी-अस्मिता और आधुनिकता से उपजे नए संकटों का गहन मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करते हैं, जो पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए स्त्री को हीनता-ग्रंथी और अपराधबोध से मुक्त होकर स्वतंत्रता व आत्म-सम्मान की तलाश करती एक सशक्त इकाई के रूप में चित्रित करते हैं, और इस तरह वे स्त्री-विमर्श को एक नई दिशा देते हैं, जहाँ प्रेम, यौनिकता और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे मुद्दों को बिना किसी संकोच के उठाया जाता है। उनके उपन्यास रिश्तों की उपयोगितावादी प्रकृति, पारिवारिक संरचना के भीतर के शोषण और व्यक्ति के आंतरिक द्वंद्वों को उजागर करते हैं, जिससे उनका साहित्य सामाजिक प्रासंगिकता और भविष्योन्मुखी दृष्टि प्राप्त करता है।”⁴

मृदुला गर्ग के उपन्यास वैश्विक परिदृश्य में स्त्री-पुरुष संबंधों, आधुनिकता के संकट, और नारी अस्मिता के गहरे मनोवैज्ञानिक चित्रण के लिए सराहे जाते हैं, जो उन्हें रूढ़िवादी सीमाओं से मुक्त कर, उपभोक्तावाद और पारंपरिक बंधनों से जूझती स्त्री की चेतना को नारी-मुक्ति के दर्शन से जोड़ते हैं, जहाँ 'चित्तकोबरा' और 'कठगुलाब' जैसे उपन्यासों में प्रेम, यौनिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का बेबाक चित्रण किया गया है, तो वहीं अनित्य व मिलजुल उपन्यास में राजनीतिक जीवन से जुड़ी स्त्री की सहभागिता समाज में नए कृतिमान स्थापित करते दिखाई पड़ते हैं। जिससे वे समकालीन स्त्री विमर्श को नई दिशा देती हैं।

नौकरीपेसा कामकाजी महिलाओं के जीवन की समस्याएँ बाजारवाद व पूँजीवाद के और बढ़ती उनकी असिमित लालसाओं ने स्त्री के लिए अनेक संकट खड़े कर दिए हैं। स्त्री के सामने द्वंद्व और दुविधा दोनों विराजमान हो गये हैं। उसकी टकराहट दोहरे समाज से है जो उसे परंपरागत रूप में देखना चाहती है। इसी परंपरागत समाज को मृदुला गर्ग की स्त्रियाँ नकारती हैं और उपभोक्तावादी एवं पूँजीवादी समाज के साथ चलते हुए अपने कृतिमान स्थापित करना चाहती हैं। चाहे असीमा हो नमिता हो नर्मदा हो माधवी हो मनु हो मनीषा हो सभी में जीवन जीने की स्वतंत्र चेतना विराजमान है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास के पात्र वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समकालीन भारतीय स्त्री की बदलती अस्मिता, स्वतंत्रता और अस्तित्व के संघर्षों को दर्शाते हैं, जहाँ वे पारंपरिक बंधनों को तोड़कर मनोवैज्ञानिक यथार्थ, प्रेम, विवाह-बाह्य संबंधों, आर्थिक आत्मनिर्भरता और समाज में अपनी जगह बनाने की कोशिश मुस्तैद हैं। साथ ही वह रूढ़िवादी सोच को चुनौती देते हुए स्त्री-विमर्श को एक नई दिशा देती हैं और समकालीन समाज के बदलते रिश्तों व उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभावों का सूक्ष्म चित्रण करती हैं।

वैश्विक प्रासंगिकता उनके लेखन की प्रमुख बिंदु रहा है। उनके लेखन में पाश्चात्य प्रभाव और भारतीय यथार्थ का मिश्रण दिखता है, जो आधुनिक पीढ़ी के जीवन, रिश्तों, और सांस्कृतिक मूल्यों पर भौतिकवाद और पश्चिम के असर को अभिव्यक्त करता है, जिसमें पारंपरिक संरचनाओं का टूटना, शहरीकरण का दबाव, उपभोक्तावाद और नई टेक्नोलॉजी के कारण रिश्तों में आए बदलाव (जैसे वर्चुअल रिश्ते) प्रमुख हैं, जो मानवीय संबंधों को जटिल बनाते हैं और आधुनिक भारतीय समाज की पहचान के संकट को उजागर करते हैं। जहाँ उनकी स्त्रियाँ आर्थिक आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत फैसले लेने में सक्षम हैं, जो वैश्विक महिला सशक्तिकरण की दिशा से जुड़ता है।

समकालीन भारतीय समाज, विशेषकर शहरी मध्यम वर्ग की जटिलताओं, बदलती पारिवारिक संरचनाओं और स्त्री-पुरुष संबंधों में आए बदलावों का यथार्थवादी और बहुआयामी चित्रण करते हैं, जहाँ आधुनिकता के साथ आए नए संकट, उपभोक्तावाद और यौनिकता के मुद्दों को बिना किसी अपराधबोध के चित्रित किया गया है, जो स्त्री-विमर्श और सामाजिक न्याय के सवालों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बनाता है। मृदुला गर्ग के उपन्यास चित्तकोबरा, मिलजुल मन, कठगुलाब, उसके हिस्से की धूप, मैं और मैं में वैवाहिक संबंध और स्त्री पुरुष के बीच की मानवीय संबंधों में बाजारवाद, व भूमंडलीकरण का प्रभाव विशेष कर देखने को मिलता है। उनकी स्त्री का प्रमुख सरोकार रहा है अपने पक्ष में खुद लड़ना और खुद खड़े होना जब तक यह लड़ाई अपनी ओर से वह नहीं लड़ती उनकी स्त्री संतुष्ट नहीं होती। उनके उपन्यास कठगुलाब में “स्त्री जाति पनपती वेदना को मनोविश्लेषणात्मक चिंतन के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा,

पत्रों के माध्यम से बौद्धिक, चिंतनशील, शिक्षित, आर्थिक, स्वावलंबी तथ्यों को उभारा गया है। उन्होंने स्त्री पात्रों के माध्यम से पुरानी परंपराओं को तोड़कर नये युग की नई परंपराओं, परिकल्पनाओं का चित्रण किया है। भारतीय परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर पाश्चात्य सभ्यता के आलोक में स्त्री में आए बदलाव को रेखांकित किया है।”⁵

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, डॉ. विजय लक्ष्मी, मिश्रा, डॉ. सुकृति, स्त्री चिंतन की विविध आयाम, भारतीय प्रकाशन वाराणसी 10 प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ-100
2. पी.आर.वासुदेवन, आधुनिक हिंदी उपन्यासों में चित्रित नारी, पृष्ठ-62
3. वहीं, पृष्ठ-62-63
4. AI अवलोकन, विकीपीडिया, शुक्रवार 26/12/2025
5. डॉ.स्नेहलता, समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श, पृष्ठ सं-169